"जुआरी"

• हउमै करतिआ नह सुख होई । मनमत झूठी सचा सोई ।
सगल बिगूते भावै दोइ । सो कमावे धुरि लिखिआ होई ।

अर्थः- अपने मन की अगवाई में रह के हर समय अपने ही बड़प्पन व सुख की बातें करने से सुख नहीं मिल सकता । मन की समझदारी नाशवान पदार्थों में जोड़ती है वह परमात्मा सदा स्थिर रहने वाला है और सुख का श्रोत है । 'मन मति' और 'परमात्मा' का स्वाभाव अलग - अलग है, दोनों का मेल नहीं सुख कहाँ से आए ? जिस को नाम विसार के मेर - तेर अच्छी लगती है, वह सारे खुआर ही होते हैं । पर जीवों के भी क्या वश

? किए कर्मों के अनुसार जीव के माथे पर जो धुर से लेख लिखे होते हैं, उसी के अनुसार यहाँ कमाई करता है नाम - स्मरण छोड़ के नाशवान पदार्थों में सुख की तलाश के व्यर्थ प्रयत्न करता है ।

ऐसा जग देखिआ जुआरी । सभि सुख मागे नाम बिसारी ।1।रहाउ।

अर्थः- मैंने देखा है कि जगत जूए की खेल खेलता है, ऐसी खेल खेलता है कि सुख तो सारे ही मांगता है, पर जिस नाम से सुख मिलते हैं उस नाम को विसार रहा है ।

अदिसट दिसै ता कहिआ जाई । बिन देखे कहणा बिरथा जाई । गुरमुखि दीसै सहजि सुभाई । सेवा सुरत एक लिव लाई ।2।

अर्थः- परमात्मा इन आँखों से दिखाई नहीं देता । अगर आँखों से दिखाई दे, तो ही उससे मिलने की कसक पैदा हो, और उसका नाम लेने को चित्त करे । आँखों को दिखे बिना उसके दीदार की खींच नहीं बनती और चाह से उसका नाम नहीं लिया जा सकता खींच बनी रहती है दिखाई देते पदार्थों से । गुरु के सन्मुख रहने से मनुष्य का मन दिखते पदार्थों से हट के अडोलता में टिकता है, प्रभु के प्रेम में लीन होता है और इस तरह अंतरात्मे वह प्रभु दिख पड़ता है । गुरु के सन्मुख मनुष्य की सूरति गुरु की बताई सेवा में जुड़ती है, उसकी लगन एक परमात्मा में लगती है ।

सुख मांगत दुख आगल होई । सगल विकारी हार परोई । एक बिना झूठे मुकति न होई । करि करि करता देखै सोई ।3।

अर्थः- प्रभु का नाम विसार के सुख मांगने से बल्कि बहुत दुख बढ़ता है क्योंकि मनुष्य सारे विकारों का हार परो के अपने गले में डाल लेता है । नाशवान पदार्थों के मोह में फंसे हुए को परमात्मा के नाम के बिना दुखों व विकारों से खलासी हासिल नहीं होती । प्रभु की ऐसी ही रजा है वह करतार स्वयं ही सब कुछ करके खुद ही इस खेल को देख रहा है ।

त्रिसना अगनि सबदि बुझाए । दूजा भरम सहजि सुभाए । गुरमती नाम रिदै वसाए । साची बाणी हरिगुण गाए ।4।

अर्थः- जो मनुष्य गुरु के शब्द में जुड़ के अपने अंदर से तृष्णा की आग बुझाता है, अडोल अवस्था में टिक के प्रभु के प्रेम में जुड़ के उसकी मायावी पदार्थों की ओर की भटकना खत्म हो जाती है । गुरु की शिक्षा पर चल कर वह परमात्मा का नाम अपने हृदय में बसाता है । प्रभु की महिमा की वाणी के द्वारा वह परमात्मा के गुण गाता है और उसके अंदर आत्मिक आनंद पैदा होता है ।

तन महि साचो गुरमुखि भाउ । नाम बिना नाही निज ठाउ । प्रेम पराइण प्रीतम राउ । नदरि करे ता बूझै नाउ ।5।

अर्थः- वैसे तो हरेक शरीर में सदा स्थिर प्रभु बसता है, पर गुरु की शरण पड़ने से ही उसके साथ प्रेम जागता है और मनुष्य नाम स्मरण करता है नाम के बिना मन एक टिकाने पर आ नहीं सकता । प्रीतम प्रभु भी प्रेम के अधीन है जो उसके साथ प्रेम करता है प्रभु उस के ऊपर मेहर की नजर करता है और वह उसके नाम की कद्र समझता है ।

माइआ मोह सरब जंजाला । मनमुख कुचील कुछित बिकराला । सतिगुर सेवे चूके जंजाला । अंम्रित नाम सदा सुख नाला ।6।

अर्थः- माया के मोह सारे मायावी बंधन पैदा करते हैं । इस करके मन के मुरीद मनुष्य का जीवन गंदा, बुरा व डरावना बन जाता है । जो मनुष्य गुरु का बताया हुआ राह पकड़ता है, उसके माया वाले बंधन टूट जाते हैं । वह आत्मिक जीवन देने वाला नाम जपता है, और सदा ही आत्मिक आनंद अपने अंदर पाता है ।

गुरमुख बूझै एक लिव लाए । निज घरि वासै साचि समाए । जंमण मरण ठाक रहाए । पूरे गुर ते इह मति पाए ।7।

अर्थः- गुरु के सन्मुख रहने वाला मनुष्य नाम की कद्र समझता है, एक परमात्मा में तवज्जो जोड़ता है, अपने स्वै - स्वरूप में टिका रहता है, सदा स्थिर प्रभु के चरणों में लीन रहता है । वह अपना जनम मरन का चक्र रोक लेता है । पर ये बुद्धि वह पूरे गुरु से ही प्राप्त करता है ।

कथनी कथउ न आवै ओर । गुरु पुछ देखिआ नाही दर होर । दुख सुख भाणै तिसै रजाई । नानक नीच कहै लिव लाई ।8।4

(1-222-223)

अर्थः- जिस परमात्मा के गुणों का अंत नहीं पड़ सकता, मैं उसके गुण गाता हूँ । मैंने अपने गुरु को पूछ के देख लिया है कि उस प्रभु के बिना सुख का और कोई ठिकाना नहीं है । जीव के दुख और सुख उस प्रभु की रजा में ही उस प्रभु की मर्जी से ही मिलते हैं । अंजान मति नानक प्रभु चरणों में तवज्जो जोड़ के प्रभु की महिमा ही करता है इसी में ही सुख है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"